ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-4* May- 2020
Innovation The Research Concept

गुरू जाम्भो जी का चिंतन एवं वर्तमान परिप्रेक्ष्य में इसकी प्रासंगिकता

Guru Jambhoji's Thinking and its Relevance in the Current Perspective

Paper Submission: 15/5/2020 , Date of Acceptance: 29/5/2020, Date of Publication:30/5/2020

अनिला पुरोहित
सह आचार्य,
इतिहास विभाग,
राजकीय डूंगर महाविद्यालय,
बीकानेर, राजस्थान, भारत

इन्द्रा विश्नोई
सह आचार्य,
दर्शनशास्त्र विभाग,
राजकीय डूंगर महाविद्यालय,
बीकानेर, राजस्थान, भारत

वंदना चौधरी
व्याख्याता,
इतिहास विभाग,
राजकीय बांठिया बालिका
उच्च माध्यमिक विद्यालय,
भीनासर, बीकानेर,
राजस्थान, भारत

सारांश

भारत में संत परम्परा प्राचीन काल से विद्यमान रही है। भारत की इस पावन धरा पर अनेको संतो ने अपने चिंतन एवं दर्शन से न केवल भारत वर्ष अपितु सम्पूर्ण विश्व के कल्याण हेतु कामना की है। इन्हीं संतो में से एक संत जम्भेश्वर जी है। इनका जीवन दर्शन वैश्विक है। अंहिंसा, प्रकृति संरक्षण, पर्यावरण के संरक्षण एवं नशा मुक्ति आदि उनके दर्शन का मूल मंत्र था।[1] आज मानव एवं प्रकृति में तारतम्यता नही होने की वजह से ग्लोबल वार्मिंग, अनियंत्रित प्राकृतिक आपदाएं घटित हो रही है। ऐसे समय में गुरू जम्भेश्वरजी की शिक्षा निःसन्देह इस दिशा में मार्गदर्शन का कार्य करती है। हमारे प्राचीन ग्रन्थों में भी कहा गया है कि प्रकृति मानव का पोषण करती है परन्तु वर्तमान मनुष्य प्रकृति के दोहन में लगा हुआ है। जीव हिंसा से प्रकृति एवं मानव के बीच का संतुलन बिगड़ गया है और इसकी वजह से आज मानव जीवन कोविड–19 जैसी भयंकर आपदा के खतरे में पड़ चुका है। ऐसे समय में गुरू जाम्भो जी का दर्शन अत्यन्त महत्वपूर्ण बन जाता है।

The saint tradition has existed in India since ancient times. Many saints have wished for the welfare of not only India but the entire world with their thoughts and philosophy on this holy land of India. One of these saints is Jambheshwar ji. His philosophy of life is global. Non-violence, conservation of nature, preservation of environment and de-addiction were the main mantra of his philosophy. At such a time, the education of Guru Jambheshwar undoubtedly acts as a guide in this direction. It is also said in our ancient texts that nature nourishes man, but the present man is engaged in exploitation of nature. Biological violence has disturbed the balance between nature and humans and because of this, human life today is in danger of a terrible disaster like Kovid-19. At such a time, the philosophy of Guru Jambho becomes very important.

मुख्य शब्द : गुरू जाम्भो जी, प्राकृतिक आपदाएं, अंहिंसा, मानसिकता ।
Guru Jambho ji, Natural Disasters, Non-Violence, Mentality.

प्रस्तावना

संत जाम्भो जी का चिंतन एवं इनके वर्तमान समय में उपयोगिता एक सम सामयिक विषय है।[3] प्रकृति पर्यावरण, पशु संरक्षण पर जितना महत्व मध्यकालीन संतो में गुरू जाम्भो जी ने दिया उतना शायद अन्य संत नहीं दे पाये यह बात सर्वविदित है। गुरू जाम्भो जी ने अपने ''सबदवाणी''[4] में मनुष्य को इस बात के लिए सदैव प्रेरित किया कि वह जीवन को सादगी एवं प्रकृति प्रिय बनाये रखे। जीवन के निर्माण एवं पोषण में प्रकृति की बेहद अहम भूमिका होती है। बदले में जीव यदि इसका दोहन या शोषण ही करता रहेगा तो सम्भवतः एक समय प्रकृति भी पोषण को छोड़ देगी। आज जिस प्रकार कोविड–19 जैसी आपदा विश्व में फैल रही है उसका अवलोकन करें तो पायेगे कि कहीं ना कहीं मानव एवं प्रकृति के बीच तारतम्यता में कमी के कारण सब हो रहा है। मनुष्य ने प्रकृति विरूद्ध आचरण कर अपने भौतिक सुखों में तो इजाफा कर लिया परन्तु उसका शारीरिक जीवन दरबदर कमजोर हो गया । वर्तमान समय में छोटे–छोटे बच्चो मे कैंसर, मधुमेह, हृदय संबधी रोग इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि मानव ने प्रकृति संरक्षण व पूजा को त्याग दिया और इसका परिणाम आने वाली पीढ़ियां भुगत रही है।

हमारे पूर्वज कहते थे ''पहला सुख निरोगी काया''। मनुष्य स्वस्थ है तो वह सबसे बड़ा सुखी है परन्तु अब लोगों की मानसिकता में सुख की परिभाषा बदल गयी है। भारत में सनातन काल से ही पर्यावरण के साथ मित्रता का भाव रहा है। पीपल, नीम, तुलसी, नदी, सूर्य आदि सभी को देवता मानकर इनकी पूजा का विधान हमारे प्राचीन ग्रंन्थों में दे रखा है।[5] गुरू जाम्भो जी ने पर्यावरण को इसी व्यापक अर्थ में ग्रहण किया था। उनके जीवन का सार भी इसी बात के लिए था कि मनुष्य हिंसा, पशुवध, नशा एवं प्रकृति के अति दोहन से बचे ताकि वह इनके कुप्रभावों से बच सके।

साहित्यावलोकन

यद्यपि संत जाम्भो जी के विचारों पर पूर्व में भी प्रकाश डालने का कार्य किया गया है परन्तु उनके विचार इतने व्यापक व वैश्विक है कि समय की मांग के अनुसार उन्हें और विस्तारपूर्वक बताया जा सकता है। संत जाम्भो जी ने अपने जीवन में प्रकृति का सम्पूर्ण आनन्द लिया और मानव जाति को भी प्रेरित किया। अपने उन्नतीस नियमों में उन्होनें मानव एवं पर्यावरण के बीच मित्रता सम्बन्ध रखने की सीख दी। उनका यह कथन ''पहले अपने पुत्र पौत्र को मारो सौ पीढो जाय रूंख जीव संधारो''।[6] इस बात का सूचक है कि वो प्रकृति, जीव, पर्यावरण के प्रति सद्भाव रखते है। इसके बारे में हमें निम्न कथनों से भी जानकारी प्राप्त होती है –

1. जीव दया नित् राख पाप नहीं कीजिए।
2. जांटी हिरण, संहार देख सिर दीजिए।
3. बघिया करे बैल हो तो देख छुड़ाइये।
4. बरजत मारे जीव तांह मर जाईये।
5. जीवन भरे जैहि काम कदै न कराईये।
6. जीवा ऊपरि जोरकरीजे अन्तिकाल हुयसी।
7. रे। बिन ही गुन्हैं जीव क्यू मारो।[7]

इन सब अमृतवाणी में प्रकृति, जीव, पर्यावरण की संवृद्धि एंव संरक्षण की सीख दी गयी है।

जाम्भो जी ने आज से पांच सौ वर्ष पहले ही मनुष्य को पर्यावरण के संरक्षण का महत्व बता दिया था।[8] इस संसार में सभी प्राणियों को अपने–अपने शरीर से एक जैसा लगाव होता है। ऐसे मे मनुष्य अपने शरीर के पोषण हेतु दूसरे प्राणियों का वध करता है तो यह अत्यन्त बुरा कार्य है। जाम्भो जी ने अपनी 'सबदवाणी' में केवल मात्र दया, क्षमा, प्रकृति से अनुराग, पर्यावरण एवं चित्त की शुद्धता आदि का ही जिक्र किया है। उनका चिंतन सांख्य दर्शन, योग दर्शन आदि की भांति गूढ़ एवं गुप्त न होकर बिल्कुल सरल एवं सादा है। गुरू जाम्भो जी ने उस समय विज्ञान का वह ज्ञान प्राप्त कर लिया जिसका आज के आधुनिक युग में बेहद महत्वपूर्ण स्थान है।

गुरू जाम्भो जी का चिंतन नित्य प्रतिदिन की जीवन से बंधा था। मनुष्य किस प्रकार अपना आहार–विहार करे, कैसे वह प्रकृति की सुरक्षा करे, जीव हिंसा से किस प्रकार अपने को विलग करे आदि। नित्य जीवन में काम आने वाली सुक्ष्म परन्तु गंभीर विषयों की शिक्षा गुरू जाम्भो जी ने अपने ''सबदवाणी'' में की थी। उनका भविष्य दृश्य ज्ञान–बोध, पर्यावरण प्रदूषण एवं प्रकृति की विपदा के लिए संचेष्ट था।

प्रकृति के तीन प्रमुख घटक है – मानव, वनस्पति, मानवेत्तर प्राणी। इनमें मानव अपनी रक्षा करने में स्वयं समर्थवान है और शेष दोनों की रक्षा भी मानव पर निर्भर है। मानव का हित दोनों को सुरक्षित करने में है। इसी से प्रकृति के विभिन्न आयामों में सन्तुलन रह सकता है एवं पर्यावरण भी शुद्ध रह सकता है। जाम्भो जी की मान्यता थी कि जीव–जन्तु, प्रकृति प्रदत्त उपादान, प्राकृतिक सौन्दर्य है और ये उपादान मानव जीवन का सौरभ है। प्रकृति परिधान हमारा वैभव है, प्रकृति जीवन है, जीवन औषधि है, प्राणवायु है, मानव मात्र का आर्थिक स्त्रोत है।

जाम्भो जी का जीवन बुद्धिजीवियों और पर्यावरण वैज्ञानिकों के लिए अमृतमय अनुकरणीय दिग्दर्शन है। यदि उन्हें व्यावहारिक जीवन में आत्मसात कर सके तो जाम्भो जी का जीवन वैज्ञानिकों, पर्यावरण वैज्ञानिकों एवं प्रबुद्ध नागरिकों के लिए अमर संदेश है।

पर्यावरणीय क्षरण वर्तमान की एक चुनौतिपूर्ण एवं वैश्विक समस्या बन गई है एवं सम्पूर्ण विश्व पर्यावरण संरक्षण के उपाय सोचने पर मजबूर है। ऐसे समय में जाम्भो जी का चिंतन एवं उनके द्वारा प्रतिपादित नियम जो आज से कई सौ वर्षों पूर्व मानव जाति को सम्बोधित किये थे, वे आधुनिक, आर्थिक एवं औद्योगिक युग में अत्यधिक प्रासंगिक हो रहे हैं। गुरू जाम्भो जी ने सांस्कृतिक, धार्मिक, सामाजिक एवं मानवतावादी उपदेश तो दिये ही है वैश्विक परिवेश में पर्यावरण संरक्षण के मूल मंत्र भी उनकी ''सबदवाणी'' में निहित थे। उनका धर्म को पर्यावरण संरक्षण के साथ जोड़ने की सोच उल्लेखनीय एवं अद्वितीय है। उनके विचार केवल समाज सुधार हेतु ही नहीं बल्कि युगान्तरकारी एवं क्रान्तिकारी भी है। आज धरती पर वनों का विनाश किया जा रहा है, जिसका दुष्परिणाम बढ़ता पर्यावरण प्रदुषण सर्वविदित है।

गुरू जाम्भो जी ने अपने उपदेश में कहा कि ''जीव दया पालणी रूंख लीलो नहीं घावे''[9] अर्थात जीवों पर दया करना और वृक्षों को नहीं काटना। प्रकृति में पर्यावरण संतुलन को बनाये रखने के लिये जैविक घटकों (प्राणी एवं वनस्पति) का अहम महत्व है। जब भी मनुष्य प्रगति एवं विकास के नाम पर जीवों व जंगलों का अतिशोषण करता है, इसके परिणाम विनाशकारी होते है।

अगर हमें विश्व की वन संस्कृति का संरक्षण करना है तो जाम्भो जी के सिद्धांतों को अपनाना होगा। वन्य प्राणी एव वनस्पति का पारस्परिक सम्बंध अटूट खाद्य श्रृंखला के रूप में सर्वविदित है, क्योंकि कोई भी जीव परोक्ष एवं अपरोक्ष रूप से वनस्पति द्वारा जीवित है। जलवायु की शुद्धता हेतु जाम्भो जी ने अपनी ''सबदवाणी'' द्वारा नित्य हवन करने का उपदेश दिया। मनुष्य अपनी मूलभूत आवश्यकताओं के लिए प्रकृति पर निर्भर है। जाम्भो जी ने ''सबदवाणी'' मे जीव रक्षा, पर्यावरण रक्षा को प्रमुख सिद्धांत मानकर पर्यावरण की प्रबंधकीय व्यवस्था का विवरण अपनी स्वानुभूतियों के माध्यम से प्रकट किया।

अध्ययन का उद्देश्य

इस शोध कार्य का प्रमुख उद्देश्य यह है कि इस से हम मानव जाति को इस बात का पुःन स्मरण करायें कि मानव एवं प्रकृति यदि समन्वय से एक दूसरे के जीवन यापन में सहायता करें तो आज कई प्राकृतिक एवं कृत्रिम आपदाओं से न केवल बचा जा सकता है अपितु आने वाले भविष्य को भी सुरक्षित किया जा सकता है। गुरू जाम्भो जी ने अपने जीवन काल में भिन्न–भिन्न जगहों का भ्रमण किया और अपने अनुभवों से लोगों को इस बात की सीख दी कि मानव जीवन एवं पेड़, पौधे और पशु आदि परोक्ष रूप से एक दूसरे के सहायक है अतः मानव को चाहिये कि इन सब का संरक्षण, संवर्धन करें ताकि वह अपना भी भला कर सके।[2] संत जाम्भो जी का सारा जीवन पेड़–पौधे, जीव–जन्तु, पर्यावरण आदि के महत्वपूर्ण योगदान को मानव जाति को बताने में ही व्यतीत हुआ। प्रकृति के अद्भुत योगदान को जाम्भो जी ने महसूस कर मानव जाति को इसके उपयोग एंव दुरूपयोग के बारे में समझाया। पशु हिंसा से होने वाले खतरों से अवगत कराया। आज जिस प्रकार मनुष्य प्रकृति के अनवरत शोषण में लग कर अपना ही सर्वनाश कर रहा है उसे समझाने हेतु गुरू जाम्भो जी के चिंतन का अध्ययन एवं मनन करना बेहद आवश्यक हो गया है।

निष्कर्ष

गुरू जाम्भो जी का एवं वर्तमान समय में उनकी उपयोगिता आज के संदर्भ में अति महत्वपूर्ण विचार है। प्रकृति पर्यावरण, वायुमण्डल की प्रदुषण दिन प्रतिदिन बढता जा रहा है और पूरा विश्व इस समस्या को सुलझाने के निरन्तर प्रयास में लगा है परन्तु आश्चर्य की बात यह है कि जब ये सारी समस्यांए विद्यमान भी नहीं थी तब हमारे संत गुरू जाम्भो जी ने अपनी दिव्य दृष्टि द्वारा इन समस्याओं को भांपकर उस समय इसका उपाय भी बताया परन्तु अज्ञानी मानव उनके उपदेशों को समझ नहीं पाया।[10] जीव एवं वनस्पति एक दूसरे से कितने घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए है इस गुढ़ रहस्य को जाम्भो जी ने बड़े सरल भाषा में जनमानस को बताया और साथ ही सीख भी दी कि दोनों का भविष्य एक दूसरे के सरंक्षण पर टिका है। अगर मानव जाति ने पर्यावरण, वनस्पति जीव आदि के साथ मित्रवत व्यवहार न किया तो संभवत इस पृथ्वी से मानव जाति का ह्रास हो जायेगा जो हम वर्तमान में कोविड–19 जैसी बीमारी के रूप में देख रहे है जिसके कारण चीन, ब्रिटेन, फ्रांस, इटली और अमेरिका जैसी महाशक्तियों समेत समस्त विश्व में लाखों लोग मर गये। इस सबके लिए मानव जाति स्वयं जिम्मेदार है। अतः हमें वनस्पति जगत के प्राकृतिक नियमों का पालन आदर सहित करना चाहिये। यही सीख गुरू जाम्भो जी ने अपने उपदेशों में दी थी।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *वर्तमान परिदृश्य में गुरू जाम्भो जी का चिंतन – जांभाणी साहित्य प्रकाशन पृ. 122*
2. *वही पृ. 142*
3. *वही पृ. 1*
4. *वही पृ. 124*
5. *वही पृ. 133*
6. *गुरू जाम्भो जी का वैश्विक चिंतन– डा. सुरेन्द्र बिश्नोई, राजकुमार सेवक प्रकाशक जांभाणी साहित्य बीकानेर पृ. 99*
7. *वही पृ. 101*
8. *गुरू जाम्भो जी का वैश्विक चिंतन, पृ. 110*
9. *जांभाणी साहित्य : विविध आयाम डा. कृष्णलाल बिश्नोई, डा बनवारी लाल साहु, डॉ. सुरेन्द्र कुमार बिश्नोई, प्रकाशक श्री गुरू जम्भेश्वर महाराज चैरिटेबल ट्रस्ट, बीकानेर पृ. 198*
10. *गुरू जाम्भो जी का वैश्विक चिंतन, पृ. 195*